दिनांक 8 सितम्बर, 2017 को प्रभात तारा मैदान, राँची में अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर श्रेष्ठ मुखिया, प्रेरक तथा स्वयंसेवी शिक्षकों के सम्मान एवं नव साक्षरों के मध्य प्रमाण–पत्र वितरण समारोह में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण:–

परम आदरणीय भारत के माननीय उप राष्ट्रपति महोदय, राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास जी, माननीया मंत्री, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग डा० नीरा यादव, लोक सभा सदस्य श्री रामटहल चौधरी, राज्य सभा सदस्य श्री महेश पोद्दार, अधिकारीगण, मुखियागण, प्रेरकों, स्वयंसेवी शिक्षकों, नव–साक्षरों, देवियों और सज्जनों तथा प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधिगण!

सर्वप्रथम, मैं परम आदरणीय माननीय उप राष्ट्रपति महोदय का वीर एवं महान सपूतों की भूमि झारखण्ड राज्य में अभिनन्दन करती हूँ। आज अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस है। इस अवसर पर स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा श्रेष्ठ मुखिया, प्रेरक तथा स्वयंसेवी शिक्षकों का सम्मान एवं नव साक्षरों के मध्य प्रमाण–पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया है। उप राष्ट्रपति महोदय, आपकी गरिमामयी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा और बढ़ गई है। आशा है कि इस राज्य के सभी नागरिक आपके मार्गदर्शन से न केवल पूर्णत: साक्षर होने हेतु प्रेरित होंगे, बल्कि अधिक–से–अधिक शिक्षा एवं ज्ञान हासिल करने की दिशा में भी प्रयास करेंगे।

ज्ञान आधारित इस युग में शिक्षा हमारे जीवन की अनिवार्यता हो गई है। इस अहमियत को दृष्टि में रखते हुए सरकार द्वारा कई योजनायें संचालित है। अधिक–से–अधिक लोग Primary Level

का ही नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा भी ग्रहण करें, केन्द्र एवं राज्य सरकार की यह कोशिश है। वहीं देश के हर नागरिक को साक्षर बनाने हेतु सर्वशिक्षा अभियान जैसी योजनायें संचालित है। साक्षरता का अर्थ सिर्फ पढ़ना-लिखना ही नहीं, बल्कि यह सम्मान, अवसर और विकास से भी जुड़ा विषय है। दुनिया में शिक्षा और ज्ञान बेहतर जीवन जीने के लिए जरूरी माध्यम है। बालिका शिक्षा एवं महिला शिक्षा के सन्दर्भ में, मैं यहाँ कहना चाहूँगी कि एक व्यक्ति का शिक्षित होना उसके स्वयं का विकास है, वहीं एक बालिका शिक्षित होकर पूरे घर को शिक्षित कर संवार सकती है।

साक्षरता दिवस का प्रमुख उद्देश्य जहाँ नव साक्षरों को उत्साहित करना है, वहीं दूसरी ओर जो लोग साक्षर नहीं है, साक्षर होने के लिए प्रेरित करना है। आज हम जब साक्षरता की बात करते हैं, तो देखते हैं कि हमारे देश में पुरुषों की अपेक्षा महिला साक्षरता कम है। सर्वविदित है कि आज महिलायें विभिन्न क्षेत्रों में अवसर प्राप्त होने पर कई कीर्तिमान स्थापित कर रही है। ऐसे में, सभी को यह संकल्प लेना होगा कि हर व्यक्ति साक्षर बनें, चाहे वह पुरूष हो या महिला, निरक्षर कोई न रहे। साथ ही अब Literacy तक ही सीमित न रह कर, Quality Education की बात हों।

बदलते परिवेश में अब शत प्रतिशत साक्षर भारत तक ही सीमित नहीं रहना है, पूर्ण शिक्षित भारत की दिशा में एक वेग के साथ आगे बढ़ना है। ऐसा हो सकता है, मुखियागण, पंचायत प्रतिनिधि, Teachers, Self Help Groups आदि इस दिशा में समर्पित भाव से कार्य करें। साथ ही हमारे नौजवान विद्यार्थी भी

एक बेहतर **mentor** का काम कर सकते हैं। निश्चितरूपेण, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक और अन्य वंचित व पिछड़े वर्गो की महिलाओं का साक्षर न होना हमारे समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है, हमें इस चुनौती से पार पाना होगा। यदि हमें सभी नागरिकों को सशक्त करना है और तेजी से विकास करना है तो देश के न केवल हर नागरिक को पूरी तरह से साक्षर होना होगा, बल्कि शिक्षित भी होना होगा।

आज सम्मानित होनेवाले मुखिया, प्रेरक एवं स्वयंसेवी शिक्षकों का भी दायित्व है कि वे अपने-अपने इलाके में लोगों को साक्षरता की अहमियत से अवगत कराने के साथ-साथ निकटवर्ती इलाके के **Illiterate** लोगों को भी साक्षर बनायें। नव-साक्षर भी अपने साथियों एवं अन्य लोगों को साक्षर बनने हेतु प्रेरित करें। साथ ही सभी इतना में ही नहीं रूके, बेहतर-से-बेहतर शिक्षा ग्रहण करने हेतु निरंतर प्रयासरत रहें। शिक्षा का कभी अन्त नहीं होता है। अतएव सभी को न केवल साक्षर होना है, बल्कि शिक्षित होकर राष्ट्र की प्रगति में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करना है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!